International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.7 No.3 Jan –Feb 2020

मंडन मिसिर की खुरपी कहानी में व्यक्त वृद्ध विमर्श

डॉ. संतोष वसंत कोळेकर

कोल्हापुर

सारांश:

साहित्य किसी भी भाषा का हो उसमें अलग-अलग प्रकार के विमर्श को लेकर चर्चा होते ही रहती है। जैसे हिंदी साहित्य में एक युग ऐसा था कि जब दलित विमर्श, नारी विमर्श इस प्रकार के विमर्श को लेकर अधिक लेखन कार्य किया जाता था। लेकिन आज अनेक प्रकार के नए-नए विमर्श को लेकर लेखन कार्य हो रहा है। जिसमें वृद्ध विमर्श एक ऐसा विषय है जिसे समाज के सामने लानेका कार्य हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों के माध्यम से होता हुआ नजर आ रहा है। 'वृद्ध' इस शब्द का जब हम उच्चारण करते हैं। तब हमें पता चलता है कि कोई बुजुर्ग या बूढा ऐसा व्यक्ति जो अब अपनी उम्र की ढलान की ओर बढ़ रहा है। हर एक मनुष्य को इस अवस्था से गुजरना ही पड़ता है। फिर भी हम लोग वृद्ध व्यक्ति की समस्याओं को समझकर भी नासमझ बन बैठते हैं।

प्रस्तावना:

हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श को लेकर बहुत ही अच्छा खासा लेखन कार्य हुआ है। इसी प्रकार का एक लेखन 'मंडन मिसिर की खुरपी' इस कहानी के माध्यम से सूर्यनाथ सिंह ने किया है। वृद्ध विमर्श के विचारों को समाज के सामने प्रस्तुत करने का कार्य सूर्यनाथ ने आलोच्य कहानी के माध्यम से किया है। प्रस्तुत कथा के माध्यम से लेखक ने एक ऐसे पिता के जीवन को प्रस्तुत किया है, जिसके माध्यम से आज का हर एक बेटा अपने पिता के प्रति कर्तव्य की भावना को याद करें ऐसे हालातों को यहां प्रस्तुत किया गया है।

कथा की शुरुआत मंडन मिसिर की खुरपी खोजने से होती है। कथा में मिसिर नामक एक बुजुर्ग व्यक्ति है जो गांव में पूजापाठ करने का काम करते हैं। सभी लोग इनका आदर करते हैं। किसी भी प्रकार के झगड़े समस्याओं का समाधान करने का काम यहां मंडन मिसिर किया करते थे। इस मंडन मिसिर को एक बेटा है जो बैंगलोर में इंजीनियर की नौकरी करता है। इस मंडन मिसिर को अपने बाप-दादा की विरासत में अच्छी-खासी जमीन मिली थी इस कारण इस मंडन मिसिर को पैसे का लालच या लोभ नहीं था।

गांव में सभी लोग इस मंडन मिसिर को मानते थे। इस बात का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं, " हर कोई चाहता कि उनके बेटे-बेटी का विवाह मंडन मिसिर ही कराएं। मगर वे जाते अपनी मर्जी से। अगर कभी किसी ने गलती से भी दक्षिणा के बारे में पूछ लिया उसकी खैर नहीं।"[1] इस मंडन मिसिर को अपने पूर्वजों के द्वारा विरासत में मिली जमीन जायदाद के कारण मंडन मिसिर किसी को पैसे मांगकर लिया नहीं करते थे। लोग चुपके से खुशी से उन्हें नये कपड़े, पैसे आदी दिया करते थे। आज के युग के पंडितों के साथ अगर मंडन मिसिर की तुलना की जाए तो इसमें बहुत बड़ा अंतर हमें यहांपर दिखाई देगा, क्योंकि आज के कुछ पंडित जो है वह पैसा ना दे तो किसी की पूजा भी नहीं करेंगे। आज के पंडित मंडन मिसिर की तरह हमें देखने को नहीं मिलेंगे बहुत ही कम मात्रा में ऐसे लोग हमें देखने को मिलेंगे जो कि पैसे ना लेते हुए किसी भी प्रकार की पूजा-आर्चा का कार्य आज करते हो?

मंडन मिसिर के दादाजी अगनू मिसिर ज्ञानी व्यक्ति थे उन्होंने ही मंडन मिसिर को पढ़ाया- लिखाया अपने दादा की कमाई संपत्ति होने के कारण मंडन मिसिर किसी से भी पैसे का कुछ लालच नहीं रखते थे। मंडन मिसिर को तीन बेटियां और एक बेटा था उन्होंने तीनों बेटियों की शादी में खुब खर्चे किए और हर एक बेटी के शादी में खेत बेचा। लेकिन उन्होंने अपने बेटे की शादी करते समय किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लिया। खेती क्यों बेचते हो ऐसा लोगों के द्वारा पूछने पर मंडन मिसिर कहते थे " का करेंगे ई खेती-बारी सहेज के। बेटियों के हिस्से का बेच के उनको दे रहा हूं। बेटे के हिस्से का रखेंगे। और अपने को क्या, बामन का धन केवल भिच्छा।"[2] मंडन मिसिर की इन बातों से उनकी उदारता वादी विचारधारा को हम अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

मिसिर महाराज गांव में केवल अकेले रहते थे बेटियों की शादी हो गई,बेटा जो है वह बेंगलुरु में इंजीनियर है। मिसिर गांव में खेती किया करते थे। जब राजबली यादव की बेटी विधवा हो जाती है तब राजबली यादव को मिसिर के द्वारा समझाया जाता है कि, " हां। पता नहीं कौन-कौन इस्लोक पढ़ के सुना रहे थे। कह रहे थे कि बेटी तो सोना होती है। उसकी कोई औलाद नहीं है। कर दो शादी कहीं। इस तरह जवानी में विधवा रखना पाप है किसी लड़की को !...बताओ लबेद हुआ कि नहीं?"[3]

मिसिर के इन विचारों को देखकर हमें मिसिर के सुधारवादी दृष्टिकोण की पहचान होती हैं। ऐसे वृद्ध लोग देखने को नहीं मिलते हैं जो इस प्रकार के महान विचारों का पुरस्कार करते हो। अपना बेटा मिसिर महाराज को अपने पास नहीं बुलाता है फिर भी यह अपनी दुनिया में खुश रहते हैं।

एक पिता जो अपने तीन बेटियों की शादी कर चुका है और अपने इकलौते बेटे से दूर रह कर अपना जीवन अकेला जीता हो,तो उसे कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा। इस बात का विचार कर हमें वास्तविकता का एहसास

होता है। मंडन मिसिर भी अकेले ही अपना जीवन यापन करते हुए दिखाई देते हैं। मिसिर महाराज स्वयं ही खाना बनाकर खाते हैं। गांव के बहुत से लोगों ने मिसिर महाराज को अपने बेटे के पास बेंगलुरु जाने के लिए कहा। लेकिन मिसिर महाराज नहीं माने। कुछ लोगों का कहना ऐसा तक था कि," मिसिर महाराज खुद नहीं जा रहे बंगलौर तो बेटे-बहू ही जिद करके,जबरदस्ती उन्हें ले जाते। ये यहां खुद खिचड़ी बनाते-खाते हैं,अच्छा थोड़े न लगता है। इस उमर में आदमी को ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है"[4]

एक बार मंडन मिसिर अपने पोते से मिलने के लिए अपने बेटे के पास बंगलौर गये भी थे। लेकिन वहां जाकर उन्हें अपनी बहू के क्रोध और अनाप-शनाप बातों का सामना करना पड़ा। बहू की इच्छा थी की नया घर खरिदे और उसके लिए गांव की जमीन बेचदी जाए। मंडन मिसिर के बेटे ने इस बात का विरोध भी किया और मिसिर जी ने उस पर गर्व भी किया। लेकिन बहू के क्रोध के आगे किसी की कुछ भी न चली मिसिर जी को अपने बेटे को जमीन बेचकर पैसे देने ही पड़े। कोई भी मां -बाप इतनी मेहनत कर पैसे किसके लिए कमाकर रखते हैं, अपनी औलाद के लिए ही ना! मिसिर ने यही किया और अपनी जमीन बेचकर पैसे अपने बेटों को दे दिए। पुश्तैनी जमीन की आशा रखने वाली मिसिर जी की बहू खुद के नए घर के लिए इतना चिंतित थी, लेकिन उसके पिता समान ससूर गांव में कैसे रहते होगे?क्या खाते होंगे? इसकी उसे बिल्कुल भी चिंता नहीं है।

आज के युग में मिसिर के बहू की तरह ही विचार करने वाली बहुओं की संख्या अधिक है। इसीकारण आज हमें वृद्धश्रमों की बढ़ती संख्या देखने को मिल रही है। मिसिर जी का लड़का अपने पिता के प्रति आदर के भाव रखता है फिर भी वह चाहकर भी अपने पिता को अपने पास रखने में असमर्थ दिखाई देता है। हालांकि मिसिर का बेटा अपने पिता के सामने अपनी पत्नी का जमीन बेचने के मामले में विरोध कर उसे डांटता है । कहता है, " शैलजा ,अब तुम अपनी हद पार कर रही हो। पिताजी से ऐसी बेतुकी बातें करने का क्या मतलब है। जो फैसले हम दोनों को करने हैं, उसमें पिताजी को घसीटने का क्या अर्थ है। हैरानी की बात है कि इतना कॉमन सेंस भी तुममें नहीं बचा।"[5] इस कहानी के माध्यम से वृद्ध विमर्श के साथ-साथ पत्नी के बंधन में फंसे पति की व्यथा का भी प्रस्तुतीकरण हुआ दिखाई देता है। इस कथा के माध्यम से आज के युवा वर्ग को अपने माता-पिता के अमूल्य योगदान,उनकी मेहनत के प्रति किस प्रकार से जागरूक एवं कर्तव्यनिष्ठ रहना चाहिए इसकी सीख देने का प्रयास किया है।

कहानी के शुरुआत में मिसिर महाराज की खुरपी खोई हुई है और उसे पूरा गांव ढूंढ रहा है ऐसा वर्णन किया गया। कहानी के अंत में बालू की बहू को मिसिर महाराज की खुरपी दिख गई और बालू मिसिर महाराज को वह खुरपी पहुंचाने के लिए उनके घर जाता है। लेकिन घर में देखता है तो उसे वहां पर कोई भी नहीं दिखाई देता है। तब गांव के सभी लोग

मिसिर महाराज को ढूंढने लगते हैं, लेकिन वह नहीं मिलते हैं। कुछ दिन बाद पता चलता है कि मिसिर महाराज अयोध्या के एक मंदिर में दिखाई दिए। ढेर सारी जायदाद वाला धार्मिक इंसान अपनी तीन बेटियों की शादी बड़े धूमधाम से करता है,बड़े घरों में करता है,तथा अपने इकलौते बेटे को इंजीनियर बनाता है। लेकिन जब वह वृद्ध हो जाता है तब उसका सुख-दुख देखने के लिए उसके पास कोई भी नहीं रहता है। इससे बड़ी दुख और शर्म की बात और क्या हो सकती है?

लेखक ने तो केवल इस कथा के माध्यम से मिसिर महाराज की खुरपी खोने का बहाना बताया है,अपनी चार संतानों के होते हुए भी एक पिता का जीवन अगर दर-दर की ठोकरें खाते हुए बितता हो तब उस पिता का जीवन कितना लाचार होगा। यह बात लेखक इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए हुए नजर आते हैं। आज इस मंडन मिसिर की भांति कितने मां-बाप होंगे जिन्होंने बड़े-बड़े अधिकारियों को जन्म दिया,बड़े बिजनेसमैन को जन्म दिया,पर आज मिसिर महाराज की खुरपी की तरह उनका तमाम जीवन खोया सा यहाँ नजर आता है। यह बड़े-बड़े अधिकारी बने हुए लोग अपने मां-बाप को अपने पास न रखकर उन्हें वृद्ध आश्रम में रखना पसंद करते हैं, या फिर सड़कों पर पड़े रहने देते हैं। ऐसे बेटों को इस कथा के माध्यम से लेखक ने जागरूक करने का प्रयास किया है।

संदर्भ:

1. साहित्य सौरभ - डॉ.सुजितसिन्ह परिहार पृ. सं-108-109

2.साहित्य सौरभ - डॉ.सुजितसिन्ह परिहार पृ. सं-110

3.साहित्य सौरभ - डॉ.सुजितसिन्ह परिहार पृ. सं-111

4.साहित्य सौरभ - डॉ.जितसिन्ह परिहार पृ. सं-111

5.साहित्य सौरभ - डॉ.सुजितसिन्ह परिहार पृ. सं-114